मोक्ष दीक्षा शिविर

MOKSHA DIKSHA SHIVIR

"DIKSHA"

DIGITAL INFRASTRUCTURE FOR KNOWLEDGE SHARING

इस पुस्तक के ट्रेड मार्कस् सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप के अधिकार महामृत्युंजय ट्रस्ट, भोपाल (म.प्र.) के पास हैं।

प्रथम संस्करण वर्ष 2026

First Edition Year 2026

Copyrights@2024,2025 All Rights Reserved Printed & Bounded and Published By Self-Realization Fellowship is under Mahamritynjay Trust, Bhopal (M.P.)

MAHANT SHRI SWAMI SHIV GYANANAND SARSWATI MAHARAJ

AKHIL BHARATIYA DASANAM NAGA SANYASI TAPONIDHI SHRI PANCHAYATI AANAND AKHARA

TRIMBAKESHWAR JYOTILINGA 99 22 44 45 69

महंत श्री स्वामी शिव ज्ञानानंद सरस्वती महाराज जी

अखिल भारतीय दसनाम नागा संन्यासी तपोनिधि श्री पंचायती आनंद अखाड़ा

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग 99 22 44 45 69

गुरूर्ब्रम्हा गुरूर्विष्णु: गुरूर्देवो महेश्वर:। गुरू साक्षात् परंब्रम्ह, तस्मै श्री गुरूवे नम:।।

गुरू ही ब्रम्हा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही शिव है,
गुरू ही साक्षात् परम ब्रम्ह परमात्मा है,
ऐसे गुरू को दण्डवत् प्रणाम करता हूँ।

भारत में गुरू शिष्य परम्परा सदियों नहीं, अपितु युगों पुरानी है।
जो आज तक कायम है।
“गु” का अर्थ “अंधकार” और “रू” का अर्थ “प्रकाश” होता है
अर्थात जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है उसे “गुरू” कहते है।
गुरू शरीर का नाम नहीं है, गुरू प्रकाश है,
गुरू ज्ञान है और प्रकाश का ज्ञान मानव जीवन में आवश्यक हैं।
जब किसी का जीवन और ज्ञान अविभाज्य होते है, तो हम उन्हें गुरु कहते है।

-: गुरू दर्शन :-

गुरू एक प्रबुद्ध संत होना चाहिए, उनके दर्शन मात्र से गुरूत्व की अनूठी झलक मिलती हो। उनकी जीवन शैली, खानपान, पहनावा, कर्णप्रिय, मृदु वचन, कोमल और निष्कपट हृदय, धीर-गम्भीर, स्वभाव को देखकर रोम-रोम पुलकिल हो उठे, ऐसे गुरू जीवन में एक मार्गदर्शक और शिक्षक होते है। जो अज्ञानता को दूर कर ज्ञान प्रदान करते है, मन की भटकन को शांत कर, सही मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन करते है और जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते है। जो आपके कठिनतम प्रश्नों का निराकरण अत्यंत सहजता से आध्यात्मिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक ढ़ंग से कर सके।

-: हमारे जीवन में गुरू का महत्व :-

धार्मिक ग्रंथों में गुरू का पद भगवान से भी बड़ा बताया गया है, क्योंकि भगवान कौन है, कहाँ है और क्या है ? इन सभी सवालों के जवाब गुरू ने ही शिष्य को दिए है, सीधे शब्दों में समझा जाए तो इस दुनिया में इन्सान को भगवान के बारे में बताने वाले गुरू ही है, इन्सान के पास दिमाग है, वह किसी कठिनतम कार्य को सम्भव कर सकता है, एक साधारण व्यक्ति को किसी कार्य विशेष में निपुण बनाने में, किसी उचित माध्यम की आवश्यकता होती है, उस माध्यम को गुरू कहते है।

हम पैदा क्यों होते है ? हमारे जीवन का उद्‌देश्य क्या है ? शास्त्रों में वर्णित है कि भगवान् हमारे भीतर रहते है, कैसे ? और क्यों ? मानव जीवन की जीवन रेखा आत्मा है। हमारे ऊपर परमात्मा है, आत्मा परमात्मा का एक अंश है अर्थात संसार में जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी प्रभु का एक अंश है।

प्राणी इस धरती पर बार-बार जन्म लेते है या तो अपने पापों का भुगतान करने के लिए या अपने अच्छे कर्मो के पुरूस्कारों का आनंद लेने के लिए। जब तक आत्मा के अच्छे और बुरे कर्मो का संतुलन शून्य न हो तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। इस जीवन में जन्म लेने का हमारा उद्देश्य उन शक्तियों में वापस विलीन होना है, जहाँ से हम आए थे। आत्मा का परमात्मा से मिलन इसे मोक्ष कहते है।

-: योग्य गुरू का चयन :-

एक योग्य गुरू का चयन करते समय उसकी दयालुता, शांतिप्रिय, क्षमावान, धैर्यशाली, प्रेमपूर्वक व्यवहार करने वाला, उत्साह से भरा हुआ, साहसी और ज्ञान की प्रतिमूर्ति हो। गुरू का आध्यात्मिक ज्ञान गहरा होना चाहिए, गुरू का आध्यात्मिक मार्ग का अच्छा अनुभव, निष्ठा, प्रेम से युक्त और मार्गदर्शन जैसे गुण देखने चाहिए। गुरू को अपने शिष्य से कोई भौतिक और सांसारिक लाभ लेने की कामना न हो, साथ ही शिष्य के साथ साफ और सच्चा व्यवहार करता हो, अपने शिष्यों को सत्य के मार्ग पर चलाने के साथ-साथ शिष्यों को आत्मज्ञान प्राप्त करने एवं परम-पिता परमात्मा से प्रेम करना सिखाए। स्मरण रहें, एक योग्य गुरू आपको परमात्मा के करीब ले जाएगा और आपके जीवन के मूल उद्देश्यों का अर्थ समझाएगा।

-: जीवन का सत्य :-

जीवन का अटल सत्य है **"मृत्यु"** जिस प्राणी मात्र ने जन्म लिया है, उसकी **"मृत्यु"** होना सुनिश्चित है। पृथ्वी लोक में प्राणी मात्र अपने कर्मो के आधार पर ही जन्म लेता है, न ही वह अपनी इच्छा से जन्म लेता है, न ही वह अपनी इच्छा से **"मृत्यु"** को प्राप्त होता है। जन्म से **"मृत्यु"** के बीच के क्षणों को वह अपनी इच्छा से व्यतीत करता है। प्रभु की इच्छा से नहीं। विधाता ही तय करते है, कि किस प्राणी को किस देश, स्थान, वातावरण या घर में जन्म लेना है, उसका चेहरा, बुद्धि, रंग, सेहत, वजन और ऊँचाई यहाँ तक की जन्म से ही पूर्ण स्वस्थ या जन्म से ही विकलांग उत्पन्न होना या जीवन काल के किसी भी क्षण में किसी बीमारी या दुर्धटना से ग्रसित होकर शेष जीवन परेशानी झेलते हुए गुजारना। इसी तरह **"मृत्यु"** भी प्राणी मात्र की इच्छा से नहीं होती, उसे भी श्री हरि निर्धारित करते है कि, किस उम्र में किस स्थान पर आसान या पीड़ादायक **"मृत्यु"** होगी।मनुष्य या पशु पक्षी भी खुली हवा में आजादी से अपना जीवन व्यतीत करेगा या कर्मदण्ड के अनुसार कैद (कारावास/पिंजरा) में रहेगा। जीवनसाथी कैसा मिलेगा, अच्छा जीवनसाथी मिला तो मनुष्य सुखी अन्यथा तत्वज्ञानी हो जाता है, यह भी परमपिता परमात्मा ही तय करते है। इस **"जन्म-मृत्यु"** के चक्र से मुक्ति पाना ही मोक्ष है। मोक्ष किसी योग्य आध्यात्मिक गुरू के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

"संत रामानंद जी के शिष्य संत कबीर जी की पंक्तियों के अनुसार"

"गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।"

संत कबीर जी ने गुरू की तुलना भगवान से की और गुरू को भगवान से श्रेष्ठ बताया। मनुष्य को वास्तविक आध्यात्मिक गुरू का चयन कर उससे मोक्ष दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए तथा गुरू में अगाध श्रृद्धा रखते हुए उसके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर मोक्ष को (उपलब्ध) प्राप्त करना चाहिए।

"गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोक्ष।
गुरू बिन लखै न सत्य को, गुरू बिन मिटै न दोष।।"

बिना गुरू के ज्ञान का मिलना असम्भव है, जब तक मनुष्य अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता हुआ, मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है, तब तक कि गुरू की कृपा प्राप्त नहीं होती। मोक्ष रूपी मार्ग दिखलाने वाले गुरु है, बिना गुरू के सत्य एवं असत्य का ज्ञान नहीं होता। उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता। फिर मोक्ष कैसे (उपलब्ध) प्राप्त होगा ? अतः गुरू की शरण में जाओ। गुरू ही सच्ची राह दिखाएगें।

"गुरू पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत।।"

गुरू और पारस के अन्तर को सभी ज्ञानी पुरूष जानते है। पारस मणि का विषय जग विख्यात है कि उसके स्पर्श से लोहा सोने का बन जाता है, किन्तु गुरू भी इतने महान है कि अपने गुणज्ञान में ढ़ालकर शिष्य को अपने जैसा ही महान बना लेते है।

"ये तन बिष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शिश कटे और गुरू मिले, तो भी सस्ता जान।।"

हमारा शरीर बिष के पौधे के समान है और गुरू अमृत की खान है। गुरू तक पहुँचने के लिए जान भी चली जाए तो सौदा सस्ते का ही रहता है। क्योंकि एक बार जब हम स्वयं को गुरू को समर्पित कर देते है, तब गुरू द्वारा परिभाषित मार्ग पर चल कर अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर पाते है।

"गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।"

गुरू कुम्हार के समान है और हम उनके पहिए पर चढ़ी मिट्टी की तरह है। जैसे कुम्हार मिट्टी को बाहर से मारता है और अतिरिक्त मिट्टी और अशुद्धियों को अन्दर से आकार देने के लिए खोदता है, गुरू बाहर से अपने बच्चों पर कठोर हो

सकता है, लेकिन अन्दर से वह उन्हें प्यार करता है और उन्हें पवित्र बनाता है। गुरू जप, निष्काम सेवा और ध्यान को मोक्ष का सबसे स्पष्ट और छोटा मार्ग कहते है।

-: मोक्ष दीक्षा का अर्थ :-

मोक्ष का वास्तविक अर्थ जन्म-मृत्यु के आवागमन से मुक्ति और परमब्रम्ह-परमात्मा की दिव्य-ज्योति में विलीन होकर परमानंद की प्राप्ति करना है। मोक्ष एक दार्शनिक शब्द है, मोह का क्षय होना मोक्ष कहलाता है। वेदों में पूर्ण आत्मज्ञान द्वारा माया सम्बध से रहित होकर अपने शुद्ध ब्रम्हस्वरूप का बोध प्राप्त करना मोक्ष है अर्थात सब प्रकार के सुख दुःख और मोह आदि का छूट जाना ही मोक्ष है। भारतीय दर्शन में मोक्ष को अंतिम और स्थायी अवस्था माना जाता है, जहाँ आत्मा जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाती है। सांख्य, वेदांत, योग और अन्य दर्शनों में मोक्ष अवधारणा भिन्न भिन्न रूपों में मिलती है, परन्तु अधिकतर मत इसे अपरिवर्तनशील और अंतिम स्थिती मानते है।

मोक्ष एक दीर्घकालिक विश्रांति की अवस्था है, जिसमें आत्मा संसार के आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक दुःखों से मुक्ति होती है। लेकिन यह मुक्ति स्थायी नहीं होती, क्योंकि संस्कारों के बीज चित्त में सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहते है, जो बहुत लंबे समय के बाद पुनः जागृत होकर जन्म का कारण बनते है। इस प्रकार मोक्ष और बंधन एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में चलते रहते है। सांसारिक बंधन, दुःखों और पुर्नजन्म के चक्र से मुक्ति, यह एक ऐसी स्थिती है जहाँ आत्मा परम आनंदित होकर, अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करती है।

-: मोक्ष और मुक्ति में अंतर :-

मुक्ति का अर्थ होता है, मृत्यु के उपरांत इस जन्म और शरीर से प्राणी मात्र को मुक्ति तो मिल जाती है, लेकिन उसके कर्मो के आधार पर उसे स्वर्ग, नर्क या पृथ्वी पर पुनः जन्म लेना पड़ता है, वह किस योनि के साथ, किस स्थान या किस परिवार में जन्म लेगा, यह उसके कर्मो के लेखा-जोखा पर आधारित होता है। जबकि मोक्ष का अर्थ है सांसारिक बंधन,दुःखों और पुर्नजन्म के चक्र से मुक्ति,यह एक ऐसी स्थिती है, जहाँ आत्मा परम आनंदित होकर, अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करती है।

-: मोक्ष दीक्षा :-

मोक्ष शास्त्र के रचियता भगवान श्री उमास्वामी आचार्य है, भगवान् श्री कुन्द कुन्दाचार्य देव जी के मुख्य शिष्य थे। मोक्ष प्रदाता विष्णु भगवान् है। अहम् ब्रम्हास्मि का ज्ञान होना ही मोक्ष है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए दी जाने वाली एक आध्यात्मिक प्रक्रिया को मोक्ष दीक्षा कहते है। जिसमें आध्यात्मिक गुरू द्वारा किसी शिष्य को दीक्षा दी जाती है,

दीक्षा का अर्थ है एक ज्ञान या शक्ति प्राप्त करना, जो व्यक्ति को मोक्ष के मार्ग पर ले जाती है। मोक्ष दीक्षा में गुरू की कृपा और आशीर्वाद शामिल होता है। इसमें गुरू अपनी शक्ति का स्थानांतरण शिष्य को करता है, जिससे शिष्य की कुण्डलिनीयाँ जागृत होती है। दीक्षा लेने से आत्मा में मौजूद अशुद्धियों और नकारात्मक ऊर्जा को दूर किया जा सकता है। दीक्षा से व्यक्ति को अपने वास्तविक स्वरूप और सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। दीक्षा मोक्ष की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो व्यक्ति को संसार से मुक्ति और परमात्मा से एकीकरण की ओर ले जाती है।

मोक्ष दीक्षा एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को मोक्ष की ओर ले जाती है। दीक्षा लेने से व्यक्ति को आत्मज्ञान, आत्मिक विकास और मोक्ष की प्राप्ति होती है। आत्मा द्वारा अपना और परमात्मा का दर्शन करना। आत्मा को मोक्ष भगवान की कृपा से प्राप्त होता है। भगवान की कृपा उन्हीं आत्माओं पर होती है, जिन्होंने शरीर में रहते हुए अच्छे कर्म किए हो।

-: मोक्ष दीक्षा की आवश्यकता :-

गुरू दीक्षा की उम्र शास्त्रों के अनुसार 05 से 12 बर्ष के बीच होती है। लेकिन हमें लोभ, मोह और अहंकार जैसे सांसारिक बंधनों से मुक्त होने के लिए, जिससे हमें आत्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। मोक्ष दीक्षा किसी आध्यात्मिक एवं विद्वान गुरू से तत्काल लेनी चाहिए। जिससे हमें जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने और उस दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती है।

दीक्षा हमें कर्मों के चक्र से बाहर निकलने और मोक्ष प्राप्त करने साथ ही आत्मज्ञान की प्राप्ति में मदद करती है, जिससे हमें सच्ची शांति और आनंद मिलता है।

-: मोक्ष दीक्षा में योग्य गुरू का महत्व :-

योग्य गुरू का मोक्ष की यात्रा में अत्यंत महत्व है। गुरू एक मार्गदर्शक और प्रेरणा स्त्रोत होते है, जो हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते है। गुरू के मार्गदर्शन के बिना, मोक्ष (उपलब्ध) प्राप्ति लगभग असम्भव है। गुरू हमें मार्गदर्शन करते है, हमें सही रास्ते पर चलने में मदद करते है और हमें आध्यात्मिक विकास में मदद करते है। गुरू से हमें लगन, समर्पण, जिज्ञासा, दृढ़ता और दया जैसे गुण विकसित करने में भी मदद मिलती है। गुरू हमें बताते है कि जो हम कर रहे है वह सही है या नहीं, अपने आध्यात्मिक स्तर के अनुसार मार्गदर्शन करते है साथ ही हमें अच्छे संस्कार, आत्म विश्वास और सुरक्षा की भावना देते है। गुरू हमारे अंतःकरण को शुद्ध करने में मदद करते है।

-: मोक्ष की पात्रता :-

मोक्ष एक परम आकांक्षा है, परंतु पात्रता भी आवश्यक है। मोक्ष की पात्रता प्राप्त करने के लिए शिष्य को आत्मसंयमी होना चाहिए अर्थात अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना, वासनाओं और इच्छाओं से स्वयं को मुक्त करना होगा। अपने आध्यात्मिक गुरू के प्रति अगाध श्रृद्धा रखनी चाहिए साथ ही ईमानदारी,सत्यनिष्ठा और अच्छे आचरण का पालन करना चाहिए। सत्य बोलना एवं सत्य का पालन करना चाहिए। शिष्य को मोह, लोभ और अहंकार से अपने आपको मुक्त करना होगा। बुरे कर्मो से दूर रह कर, मन को शांत रखना पड़ेगा। मोक्ष की पात्रता के लिए निरंतर उपरोक्त बातों का संकल्पपूर्वक निर्वहन करना चाहिए, साथ ही निरंतर प्रयास एवं तपस्या करनी चाहिए। मोक्ष की पात्रता एक साधना है, जो आत्म सुधार और आध्यात्मिक विकास से प्राप्त की जा सकती है। शिष्य को अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाने और सांसारिक बंधनों से मुक्त होने की आवश्यकता है। केतु मोक्ष का कारक ग्रह है और जातक की जन्म पत्रिका में बारहवें स्थान से मोक्ष का विचार किया जाता है, मोक्ष दीक्षा प्राप्त कर गुरू की इच्छाशक्ति से जातक केतु को अपने बारहवें घर में स्थापित करवाकर, अपने मोक्ष की उपलब्धता को सुनिश्चित करवा सकता है।

-: मोक्ष किसे प्राप्त हुआ :-

मोक्ष प्राप्त करने की बहुत सी कथाएं है, प्राचीन काल में गजेंद्र नामक एक हाथी था, जिसे सरोवर में पानी पीने के दौरान मगरमच्छ को गजेंद्र का पैर पकड़कर पानी में खींचने पर, गजेंद्र ने अपने मृत्यु निकट देखकर भगवान विष्णु को स्तुति कर पुकारा, कालांतर में वह स्तुति गजेन्द्र स्तुति के नाम से विख्यात हुई, जिससे प्रभु श्री हरि ने साक्षात् प्रकट होकर, मगर का सिर सुर्दशन चक्र से काट दिया, जिससे गजेन्द्र की जान बच गई और प्रभु ने गजेन्द्र को मोक्ष भी प्रदान किया।

प्राचीन काल में गयासुर राक्षस ने कठोर तपस्या कर भगवान विष्णु से वरदान मांगा कि, उसके शरीर को लोग राक्षस कुल में जन्म लेने के कारण हेय दृष्टि से न देखे अतएव उसके शरीर को इतना पवित्र बना दिया जाए कि, जो भी उसको देखे, उसे मोक्ष मिल जाए। इस वरदान के कारण सभी प्राणी मात्र मोक्ष को प्राप्त होने लगे तो धर्मराज की व्यवस्था असंतुलित होने लगी, तब धर्मराज ने उन्होंने ब्रम्हा, विष्णु, महेश से इस संकट से मुक्ति दिलाने का निवेदन किया, तब त्रिदेव ने गयासुर से कहा कि उन्हें सर्वकल्याण के लिए एक पवित्र स्थान चाहिए और तुम्हारे शरीर से पवित्र स्थान कोई नहीं है। गयासुर ने सहर्ष अपना शरीर त्रिदेव को सौप दिया, तब देवताओं ने गयासुर की पीठ पर यज्ञ किया, गयासुर की समर्पण भावना से खुश होकर,त्रिदेव ने वरदान मांगने को कहा तब गयासुर ने कहा कि यह स्थान उसके नाम से जाना जावे और यहाँ जिस व्यक्ति का तर्पण किया जावे उसे मोक्ष की प्राप्ति हो। तभी से उस

स्थान का नाम गया जी तीर्थ हुआ और कहा जाता है कि साक्षात् मोक्ष के देवता श्री विष्णु पितृ देवता के रूप में गया जी में निवास करते है।

-: मोक्ष से लाभ एवं निष्कर्ष :-

गरूड पुराण के अनुसार पृथ्वी पर मानव की मुक्ति के चार मार्ग है पहला ब्रम्हज्ञान, दूसरा फल्गु नदी के तट पर विष्णुवट मंदिर में, अक्षय वट के नीचे गया तीर्थ में पितरों का श्राद्ध करना कहते है, यहाँ साक्षात् श्री विष्णु जी पितृ देवता के रूप में निवास करते है, तीसरा कुरूक्षेत्र में निवास करना और चौथा गौशाला में मृत्यु होना।

धर्मग्रंथों में कहा गया है कि मोक्ष प्राप्त करने के उपरांत व्यक्ति इस जीवन के जन्म मृत्यु चक्र से छुटकारा पा लेता है,भगवान के अधीन एक ऐसी जगह पर पहुँच जाता है जो दुःखों से परे है। मृत्यु के समय मनुष्य को “ऊँ” का जाप करना चाहिए, यह जाप मोक्षदायक जाप माना जाता है।

मोक्ष एक ऐसी यात्रा है जो हमें जीवन को बेहतर ढंग से समझने और अपने मन को शांत रखने में मदद करती है। यह हमें यह भी सिखाता है कि, सांसारिक सुखों में फंसा रहने के बजाय, हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए मोक्ष की राह पर चलना चाहिए। मोक्ष प्राप्त करने से हमें अनंत शांति और आनंद मिलता है और हम अपने जीवन को परमात्मा के साथ एकीकृत करके एक सार्थक जीवन जी सकते है।

सोते समय आत्मा शरीर के अंदर ही रहती है। सोते समय दिमाग का एक हिस्सा सोता है, जबकि मन विचार करना बंद कर देता है, शरीर भी अपनी मरम्मत करता रहता है। आत्मा चेतना का एक रूप है और उसे न तो छुआ जा सकता है, न देखा जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। मृत्यु के पश्चात् आत्मा यमलोक जाती है, जहाँ उसके कर्मो का लेखा-जोखा किया जाता है।फिर कर्मो के आधार पर ही उसे स्वर्ग नरक या पृथ्वीलोक वापस भेज दिया जाता है।

-: मोक्ष गुरू दीक्षा का महत्व :-

गुरू के द्वारा शिष्य के हृदय, आत्मा व देह में ऊर्जा का स्थानांतरण करना होता है।
"दी" का अर्थ देना होता है। और "क्षा" का अर्थ पचाना होता है।

गुरू दीक्षा के द्वारा शिष्य में यह सामर्थ्य उत्पन्न होता है कि, गुरू से प्राप्त ऊर्जा के द्वारा शिष्य के अंदर आंतरिक ज्योति प्रज्जवलित होती है, जिसके प्रकाश में वह अपने अस्तित्व के उद्देश्य को देख पाने में सक्षम होता है, दीक्षा से अपूर्णता का नाश और आत्मा की शुद्धि होती है।

-: गुरू का चयन :-

गुरू का चयन बहुत सोच समझकर करना चाहिए, जो भक्ति योग एवं साधना के माध्यम से मोक्ष की ओर ले जा सके। आसानी से आपको निःस्वार्थ रूप से उचित मार्ग प्रदर्शित कर सके एवं आपको जीवनपर्यंत एक ही गुरू रखकर उसके मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए। गुरू का चयन करने में जल्दबाजी न करें।

कहावत है ः पानी पिओ छानकर और गुरू करो जानकर।

-: दीक्षा के प्रकार :-

दीक्षा 64 प्रकार से दी जाती है,जैसे मांत्रिक दीक्षा, शांभवी दीक्षा, स्पर्श दीक्षा, मानस दीक्षा, शक्ति दीक्षा, समय दीक्षा, मार्ग दीक्षा, दृग दीक्षा, चक्र जागरण दीक्षा, विद्या दीक्षा,पूर्णाभिषेक दीक्षा आदि।

-: गुरू मार्गदर्शन :-

गुरू के मार्गदर्शन से इस दुनिया के भव-बन्धन से मुक्त होना, पृथ्वी पर विभिन्न प्राणियों के रूप में बार-बार जन्म लेने से आत्मा का मुक्त होना,मोक्ष प्राप्ति के बाद आत्माऐं ब्रम्हाण्ड में सुख-दुःख से परे, आनंदित होकर विचरण करती रहती है। इसका उद्देश्य सांसारिक बंधन से मुक्ति और सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति होता है।यह एक पवित्र और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवन में परिवर्तन एवं आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता हैं।

-: मोक्ष दीक्षा से लाभ :-

सांसारिक बन्धनों से मुक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति,आत्म साक्षात्कार और जीवन में अधिक शांति एवं आनंद की अनुभूति होती है, मन की भटकन समाप्त हो जाती है और मन शांत हो जाता है।

-: हिन्दू दर्शन में मोक्ष :-

हिन्दू दर्शन में मोक्ष का बहुत महत्व है मनुष्य का जीवन चार उद्देशों में बांटा गया है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये पुरूषार्थ चतुष्टय कहलाते है। जिसमें धर्म पुण्य, उचित, नैतिक जीवन है। जिसमें अर्थ का तात्पर्य है भौतिक समृद्धि, आय सुरक्षा, जीवन के साधन, किसी अच्छे कार्यो द्वारा धनार्जन करना। काम का अर्थ है,आनंद, कामुकता, भावनात्मक जीवन को सात्विक व सुखः सुविधा सम्पन्न बनाना। मोक्ष का अर्थ है, आत्मा द्वारा अपना और परमात्मा का दर्शन करना।

-: गुरू मंत्र की गोपनीयता :-

गुरू दीक्षा में गुरू मंत्र इसलिए गोपनीय रखना चाहिए क्योंकि गुरू उस मंत्र में अपनी ऊर्जा अपनी संकल्प शक्ति डाल देते है, इससे गुरू मंत्र जाग्रत हो उठता है,पति पत्नी एक ही गुरू से दीक्षा ले सकते है, वे पति पत्नी ही रहेगें, गुरू भाई और गुरू बहन नहीं बन जावेगे।

-: गुरू के प्रकार :-

आध्यात्मिक और वास्तविक जगत में प्रमुखतः तीन प्रकार के गुरू माने जाते है।

-: प्रथम गुरू :-

प्रथम गुरू **"माँ"** होती है, जो प्राणी मात्र को संसार में आने पर प्रारंभिक शिक्षा देती है।

-: शिक्षा गुरू :-

द्वितीय गुरू **"शिक्षक"** होता है, जो अक्षर ज्ञान, लेखन और पाठन की शिक्षा प्रदान करता है।

-: दीक्षा गुरू :-

तृतीय गुरू "आध्यात्मिक गुरू" होता है, जो वैदिक विधि से शिष्य को वैदिक मंत्र प्रदान करते है तथा जीवनपर्यंत सद्मार्ग पर चलना एवं आचरण करना सिखाते है।

-: मान्त्रिक दीक्षा एवं सामग्री :-

इसमें गुरूदेव द्वारा गुरू मंत्र शिष्य के कान में दिया जाता है। इस प्रक्रिया में गुरूदेव शिष्य को एक विशेष मंत्र प्रदान करते है, जिसे गुरू मंत्र कहा जाता है, जिससे ज्ञान एवं आध्यात्मिक विकास प्राप्त होता है। इस प्रक्रिया में कुछ विशेष सामग्री, साधना, अनुष्ठान एवं मंत्रों का समावेश होता है।

01	**गुरूदेव का फोटो**	**01**
02	गुरू के वस्त्र **(खादी ग्रामोद्योग से 10 मीटर भगवा रंग का मटका खादी का वस्त्र)**	**01**
03	आसन	**02**
04	पानी वाले नारियल	**02**
05	गुलाब के फूलों की माला	**02**
06	पंचमुखी रूद्राक्ष की माला जाप करने हेतु	**01**
07	कमल गट्टे की माला जाप करने हेतु	**01**
08	गौमुखी जाप हेतु	**01**
09	चावल, हल्दी, चंदन, रोरी, गुलाब के फूल, माचिस भीमसेनी कपूर आरती हेतु।	श्रृद्धानुसार
10	गुलाब के पुष्प	श्रृद्धानुसार
11	फल	**05 प्रकार**
12	मिष्ठान	श्रृद्धानुसार
13	गुरूदक्षिणा	श्रृद्धानुसार